

अध्याय २ रा.

पृ. १८

अध्याय २ रा.

पत्रे. १८



1

आध्वसरो ॥ पांन ॥ २ ॥



॥ राधव ॥ २ ॥

(2)

॥ श्रीरविकुठ भुषणाय नमः ॥ जैसे मानससरोवर वेष्टित ॥ मगळरिस
 तत्रो भीवंत ॥ तैसे श्रवणासि वैसले संत ॥ लोचन आनंत जयासी ॥ १ ॥ श्रव
 णीवैसतां संत मखन ॥ वादेसि पारकां दुष्टे पुर्ण ॥ जे साइंडु विले कुन ॥ स
 रीतानाश उचं वळे ॥ २ ॥ किं वषट्कारि गंगे धीपुर्ण ॥ क्रीचन गर्जतां नाच
 तिमयोर ॥ किं वसंत देखो निसुंदर ॥ वादिबा गर्जति आनंदं ॥ ३ ॥ किं रविदे
 खसां क्रमळं विवाश्रति ॥ क्रीचनानंदनां याचक दर्शति ॥ तैस्या देखो नि
 संत मुर्ति ॥ वाग्देवीसी आनंद ॥ ४ ॥ जैसी इद्रा पुढं रं प्रा ॥ द्वाविच्यकौतुक
 शोभा ॥ तैसि देखतां संत शोभा ॥ वागवल्लिस आनंद ॥ ५ ॥ त्रैसे घावेदृष्टांत
 हंमिनेण वीनीश्रित ॥ परीमाश्रयन्यायसप्त ॥ संतीपोटांत घालाचे ॥ ६ ॥
 श्रीवेवंसिंधरिलेंदळदळ ॥ किंसागरपोरी वडवान्तळ ॥ श्रीश्रुष्टीयाभारसक

2A

ॐ पाताळ कुर्मधीयेला ॥ १ ॥ जैसा सकळ प्रवृत्त शक्य शशी ॥ परीक्षितियेसी लो
 वे वाहतिदसी ॥ वीहि मना व्यसातासिधुतुपुष्य समर्पणं ॥ तैसे वीहेश
 वनी श्रित ॥ सखनहृदइंधरी तीस्य ॥ आसो प्रथमो आइंगत व्रथार्थ ॥ उ
 द्दरिता वाडिनासहे ॥ श्रीमन्नक्षत्राचारं प्रयेषुनी ॥ जेविंमुळीसंबि
 णतु ह्यां वेणिं ॥ परियुटे विशुद्धसमग्रामिनि जाणी जेसज्जनिव्रथाते
 सी ॥ १ ॥ क्रमठोरुवा पासुविनी प्रवृत्ती पुत्रजालधामे पौत्र स्त्री परमतप
 स्वी जैसाग भस्ति ॥ व्याही वेद जासि उवेदत ॥ १ ॥ त्रुण बिंदुवृणां देववर्ण
 ॥ ते पौत्रस्ति वी जाणिले गृहणी ॥ विश्वश्रवासापासो नि ॥ पुत्रजाला विख्यात
 ॥ १ ॥ भारदाजक्यां माहां मति ॥ ते दिधली विश्वश्रव्या प्रति ॥ सावे पोटीं नी
 श्रिति कुबेर पुत्र जन्मला ॥ १ ॥ वीश्वश्रव्या पासो नि जन्म पुण ॥ सखो निना

3

मं वैश्रवण ते गंतप क्रु निंदा रूपा व तु गान न व ष्य के ल १४८ क्रम ठा स
 नें तु छे न ॥ पौत्र पुत्र सृणो न लं का सु ष्य दे उ न ॥ सा ग गो द रीं स्त्रा पी ला ॥
 १५ ॥ पु र्बि वि धि नें लं का नि मि त्ती ॥ ते दान वी व कें बी धे त ली ॥ मा गु ती नी
 ज सीं सो उ वि ली ॥ म ग दि ध ली कु वे रा १६ ॥ तो या ता ढी वा दै ए सु मा ढी वी
 प्र वे शं हिं डे मु मं उ ठी ॥ ते वां लं का दे ख नि ते व ढी ॥ म ना मा जी आ वे श ल
 १७ ॥ म्हु णे हे लं का आ मु वी नि श्चि ता ॥ हा क्रो ग ये थं रा ज्य क्री त ॥ स मा वा
 र धे तां जा लं श्र व ॥ स र्व प्र तां त त य ध वा १८ ॥ कु वे र दे वो नि सुं द र ॥ म ग दै
 ए क्री वी वा र ॥ या वी या पि त्या सी सा वा र ॥ वृ षां दे उं आ मु वी १९ ॥ ति ज
 पा सु नि हो इ ल सु त ॥ त्या सी सा ह्य हो ति ल स र्व दै ए ॥ हे लं का रा ज्य स म स्त ॥ ही
 ग नि ये उं सृ णा थै २० ॥ हे सा सु मा ढी दु र्ज नि ॥ वी प्र वे श अव लं बु न ॥ आ ला

3A

लरी कृष्णीशंतिधरुन ॥ कृपरी पुण्डुरासां ॥ १ ॥ जैसानरा वावेशा जाण ॥ क्री
विषा-वंसीतनुपण ॥ क्रीसंक्वोरा वंगे उवचन ॥ पर प्राणाहारणार्थ ॥ २ ॥
क्रीगोपीपध्वंगायन ॥ क्रीशंभीकृष्णेंनीवरी भजन ॥ क्रीधनलुब्धास्यं सत्व
ज्ञान ॥ परधनहारणार्थ ॥ ३ ॥ क्रीवरोवरी सुंदरतुंडावन ॥ त्रिंदिसेवकृष्णी
शंतिग्रहन ॥ क्रीवैष्येवं सुवमंडपा ॥ वाप्तीकृन्नर मनहारणार्थ ॥ ४ ॥ क्रीसा
धुवेशधरुनि सुदु ॥ पात्रेसीआल माह मंद ॥ किं वार पाउनि रंज नीसिद्ध ॥
हेउनि यां वैसले ॥ ५ ॥ आसो देसा सुमाती पापरासी ॥ तेणं आपुलि कृ-यावैवै
इसी ॥ घेउनि आला विश्व श्रयापासि ॥ प्रार्थुनित्या सीदिधली ॥ ६ ॥ स्रणसिं
अत्रिंवन ब्राह्मण ॥ येक उंघ्या जी कृ-यांदान ॥ कृषिनें क्रापटपनेणोन ॥ लावी
लेंडानतिपेसी ॥ ७ ॥ हैसगे लास्वस्थानांसी ॥ मगये के दिवसीतेपतिसी ॥ सूर्य

(५)

जातां आस्ता चढासी ॥ भोग प्रागति जालियें ॥ २५ ॥ जे संध्या काळी होतां
 गर्भीणी ॥ तरी माहांता मसी जन्मे प्राणी ॥ तो हो मकाळ साधुनि ॥ भोग देइ न
 हूणतसे ॥ २६ ॥ स्त्रीसी भोग नेदि जरी ॥ ब्रह्म हत्यापडे त्या वेसीरीं ॥ तरी
 हो मद्याव्या उराव्यासी ॥ ज्जा उं नेदि करीते ॥ २७ ॥ परमशो भुनि माहां अं
 धि ॥ अंगसंग दिधला तिसरी ॥ स्वयं तु विप्रवृत्त्यां न व्हेसी ॥ माहातामसे पा
 परूपे ॥ २८ ॥ ब्रह्म राक्षस तु संजुती ॥ पुत्र होइ लडुग व्यासी ॥ येरी पती वेच
 रणाधरी ॥ ये वृसु पुत्र देइजे ॥ २९ ॥ रावणा प्राणी कुं भवणी ॥ तिसरा भक्त रा
 जा विप्रिषण ॥ जो ये चुरदें करुन ॥ साधु पुर्ण जन्मला ॥ ३० ॥ कुं भवणी जे
 हूं जन्मला ॥ मुबपसरो निहा हो प्रोडिला ॥ तें गंधु गोळ शरीला ॥ प्रळ
 ये गमला जी वासी ॥ ३१ ॥ तारी कासु र्पन रावा भजी नीजाणा ॥ परी लं तर

३

68

लतोविप्रिषया ॥ जैसावगाइ छंत अश्वत्थ निमणि ॥ केवळ स्थानविशु
 वं ॥ ५ ॥ क्रियांवाय सांतकोवेठवेवळ ॥ क्री सुक्तिमाजी सुक्ताफळ ॥ क्री
 दैत्यकुचिं प्रजनश्रीळ ॥ प्रह्लाद पुर्विजन्मला ॥ ६ ॥ यावरीगोकर्ण
 तीर्थजाउन ॥ तिथेवरीतिआनुदान ॥ रावणे आराधीलाआपणां
 रमण ॥ कुंभवर्णक्रमठोद्वय ॥ श्री विश्णु वें आराधन ॥ वरीताजस्र
 विप्रिषया ॥ ब्रह्मं येउसिं वरदान देताजालातिघांसि ॥ ७ ॥ रावण
 मागेवरदान ॥ सुणेइंद्रादीदेवराज्यगण ॥ त्यांसिमीवंदीत्राळे रक्षी
 न ॥ सर्वांसमान्य आज्ञांमा श्री ॥ ८ ॥ संपतिसंततिविद्याधन ॥ हावेंसक
 लकळप्रविण ॥ पाउपरीकुंभवर्ण ॥ वरमागेआपेक्षीत ॥ ९ ॥ तोदेवजाहा
 लेउद्दिग्न ॥ व्रायेमागेकुंभवर्ण ॥ क्री सुणेठहंकावरभक्षीन ॥ हंवर



(5)

दानमागेल काये पैं ॥ ॐ ॥ क्रीं गीं ठीं न सपो लभु गोठ ॥ क्रीं दाटे सघाली ल
 ॐ विमं उठ ॥ मगसर स्वति सी देव सकठ ॥ प्रार्थीं ने जाले ते धकां ॥ ॐ ॥
 तुं जीं ह्वा प्री व स सी दे वि ॥ तुरीं लाट्ट घा सि भ्रां ति घाला वि ॥ लो क्रीं सुखी
 रा हा वें सार्थीं ॥ ऐ सं व द वि सर स्व ति य ॐ ॥ कुं भ कृ णे आ धीं व रा स स ॥ म
 ग सर स्व ति भ्रां ति घाली वि शे ष त र वि धि सु णे घ ट श्रो त्या म ॥ आ ये शी
 त मा ग का हिं ॐ ॥ म ग वो ले कुं भ कृ णे म ज नि द्रा दे इं संपु णा ॥ आ खं उ क
 री न मीं त्रा य न ॥ कृ तु रा न न आ व ष्य सु णे ॐ ॥ ता कृ णे नि द्रा व री ये उ न
 ॥ प डि ला जै सा प्रा ण हि न ॥ शु शु त्री मा जी स र्व ज्ञा न ॥ बु डो नि गो ले त या वें
 ॥ ग्घ ॥ मं द्रा व कृ आ उ वा प डि ला ॥ क्रीं मा हां दृ स उ न म ठी ला ॥ नि द्रा भ रें षो
 सं ला ग ला ॥ हीं शा ते णं तु म दु मी ति ॐ ॥ स स ह स्ती श्वा य दें क्रा न नीं श्वा

४

57

मासरी से प्रवेशति प्राणी ॥ उश्वासरा कुनिधरणी ॥ वरीपउ सअपउ
 त ॥ ७ ॥ निशेहे देहा चीसमाधीजाण ॥ निद्रा जीवा वें आचरणा ॥ वी
 भ्रांती वें विश्रांती स्वन ॥ वी आ ज्ञान मूर्त्त मंत ॥ ७ ॥ निद्रा तपूरा चीसा
 हाकारी ॥ ध्यानां आनुषानां विश्र करी ॥ यत्तु र्य विद्या कृष्ण कुसरी ॥ निद्रे
 मा जीवु उतिपै ॥ ७ ॥ निद्रा मरणां चीसांगति नि ॥ निद्रा गत्रीची जेष्ठ भ
 जीनि ॥ निद्रा जीवासी विश्रांत करीणी ॥ आयुष्य हरानि ने तसे ॥ ७ ॥ सुख
 म्म स्मन्नारणं सियाहिं ॥ बुडो निजाति मनुष्य होहिं ॥ आसो कुंभ वृणां सि
 शुद्धनाहिं ॥ जागावहीं न वे वी ॥ ७ ॥ कुंभ वृण निद्रा सागरीं ॥ बुडो निगे
 ला आहो गत्री ॥ पिता देखो नि वी ता करी ॥ सणे उपजोनि जन्म व्यर्थया
 वण ॥ मगते पों प्रार्थी ला कृम ठासन ॥ मागी तले हें वरदान ॥ षणमास जा



6

लीणां ये वृदिना सर्वसुख जोगिता ॥ असो विभिषणा सिचतुर्वक्र ॥
 स्रणे मागं तुं इच्छितवरा तवंतो सुशीठपवित्र ॥ क्रम्ये वो लताजहाता ॥
 ॥ स्रणे सत्समागमशास्त्राववा ॥ ह्यस्य मां उपरसी भजन ॥ निद्रावाद
 द्वेषगाढुन ॥ विष्णुं वीतनक्री नमिं ॥ प्राज्ञाशुक्षां मनसा व्रतनां ॥ भ्रांति
 मुली इडावासनां ॥ ममता अविद्यासां डोनि जाणां ॥ मीविष्णुं वीतनक्री
 न ॥ ॥ विभिषणा जोबंधु राववा ॥ अतर्करणी नित्यनेमां वा ॥ जो
 स्नानसंधे सीशुद्धवाचा ॥ ससक्रेमं प्राचरे ॥ धन्यविभिषणां वीस्त्रिति
 ॥ देवठवा तिलीसुखमुति ॥ क्रीभक्त रुपें ग्रीभामदिर्ति ॥ विस्तारती आधीप
 टां ॥ ॥ सूर्या आधी उगवे आरुणा ॥ क्रीज्ञानां आगोधर भजन ॥ क्रीभज
 नां आगोधर वैराग्यपुणी ॥ तैसा विभिषणा जन्मला ॥ ॥ क्रीतया आगोधर

५

68

शुचीत्वपुण॥ क्री बोधा प्रणो धर सत्वगुण॥ क्री सत्वा आगोधर आहुत
पुण॥ पुण्य जैसंप्र गटले॥ ६५॥ क्री साशात्कारा आधी निजध्यास॥ मननां
आधी श्रवण विशेष॥ क्री श्रवणां आधी सुरस॥ आवडि पुढं ठसावे॥ ६६॥
क्री आमदसां आधी विरति॥ क्री आनंदा आधी उपरति॥ क्री आत्मसुख
शांति॥ पुढं आधी ठसावे॥ ६७॥ तैसा आधी जन्मला विप्रिषणा॥ जैसंप्र
आगोधर सुमन॥ विधिसंतवला ऐकोन॥ ह्यणेवंशधन्ययाचेनि॥ ६८॥
॥ सामडयासक जैसंत॥ यांची उपण हेची निश्चीति॥ आमानीले आदंभि
त्वा॥ अहिंसाही सर्व उत्तमगुण तैशे॥ ६९॥ अंतरनिग्रह करुन॥ शांतिरसं
भरले पुण॥ आत्मस्तुति मनांतुन॥ स्वप्नी जयासे नावडे॥ ७०॥ दुजयाचे
गुण दोषीति॥ कधी नावडे जयाचे चीति॥ पराचे उत्तमगुण वाणी ती॥ न

२

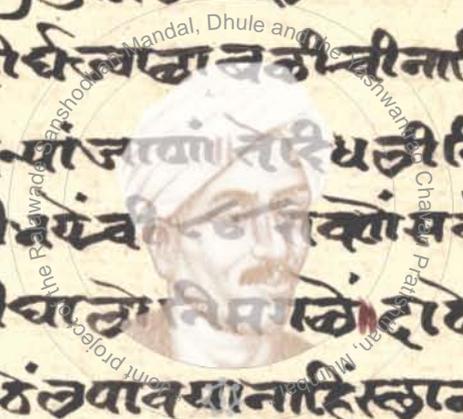
विसरति वृदां ही ॥ ६१ ॥ गर्वनेपतां आतुमात्र ॥ शोणं सिन बोले निशुश ॥ आ
 पुलिनिं दै कृतिमाचार ॥ तिर स्वार सुपजेवी ॥ ६२ ॥ जैसेमघ क्षार जळ
 प्राप्ति ॥ परीष्टि वरीगो उचीवर्षेति ॥ धनुं त्रुपाभसुनिदेति ॥ हीर आ
 नृतासारी रवं ॥ ६५ ॥ युसदं ग सिवाली भवत ॥ परीगो उहोयेरसभीत ॥ गं
 गापाप जाळु निपुण्यदे ॥ तैसं संत जणाव ॥ ७० ॥ परीसलो हो काळीमां मां
 क्रोन ॥ ताखाळ वीकरी सुवर्ण ॥ सरी पाहाराज संत सज्जन ॥ परदोषीं न
 लीपती ॥ ७१ ॥ जैसेकुळवंत कासिनीं ॥ आवये वशां विषणक्षणीं ॥ तैसं आपुले
 सुळत मांक्रोनि ॥ संतसं ज्ञनिं ठेवेति ॥ ७२ ॥ हेसा जाल सणा युक्त ॥ विविषणप
 रमजता ॥ तयासि विष्णं ना भसत्य ॥ परदेता जाहाळ ॥ ७३ ॥ वि रं वी सणे सा यप
 ॥ तुज भेटे लरु विर ॥ तोची रं जीव वरी लनिर्धार ॥ शशीसि त्र आस ती जं

7A

१७ रावणकुं भक्त्यातिवेके ॥ मेळ उ निराससदने ॥ प्रहस्तमहोदरधां
 वले ॥ प्रधान आले रावणांवे १८ ॥ विष्णु जी वृजंतु माळि ॥ वज्रदृष्टी
 विरूपाक्ष बळी ॥ वरदुषणारि श्री रास बळी ॥ विष्णु-माळी मा अवंत १९ ॥
 ॥ मत्तमाहां मत्त युध्वात्मना ॥ शुक्रसारणा पृथ्वीर समस्त ॥ बळमाहां बळ
 धांवत ॥ रावणां वेशीत सर्वही ॥ २० ॥ सवळ भार घेउन ॥ लंके वरी गेल राव
 णा ॥ वृहां नारोपे वैश्रवणा ॥ वहुं तदि न युध्वा वरीतां ॥ २१ ॥ मगरावणे काये
 वेलें ॥ पीतियात्रें पत्र आणिलें ॥ कुलापासि पाठविलें ॥ येरें वंदि लें मस्त
 किं ॥ २२ ॥ उकलोनियाची वैश्रवणा ॥ आं तलिही लें वर्तमान ॥ लुगासाप
 लबंधुरावण ॥ लंका भुवनयासदिजे ॥ २३ ॥ पित्रु आसां तें वेदवचन ॥ मा
 नुनिं निघाला वैश्रवण ॥ सवळ संपति पुष्य किं घालुन ॥ वीरं-वीपासी



पैंगेला ॥ १ ॥ मग वून वाट्टी वे पाठारीं ॥ निवृत्ति आळं कानंदन नगरी ॥ तेशें
 कुबेर त्या अवसरीं ॥ विष्णुं सुतं स्त्रिया पिल ॥ २ ॥ माण सुरें मंशेदरी शक्ति ॥
 देता जाला रावणां प्रति ॥ ही र्घ जाला वळी नीति ॥ ते दिधली कुंभ वृणां ॥
 ३ ॥ तार प्रांता मंगंधर्व वृणां जाणां ॥ ते दिधली विप्रिषणां ॥ स वृळ भुषा
 रणा रावणां ॥ लंके सिंये ती मयें व ॥ त वृणां सर्व देश जीविले ॥ गाइ ब्राह्म
 णां सिधरीति वळें ॥ सुखी घाले निमगळे ॥ दोटे खालें रागिति ॥ ४ ॥ आ
 क्रांत ले एधि वे जन ॥ को ठें लपा वया ना हि स्थान ॥ मग कुबेरें स्वर्गें दिन ॥
 सांगोति पाठविलें रावणां ॥ ५ ॥ कुबेर श्रेव वृळो लति ववन ॥ तुम्ही वेद पुत्र
 रूषि संपन्न ॥ रा व्री ली वे रा वी वं उं वरुन ॥ शास्त्र ज्ञान नाहीं तुम्हांसी ॥
 ६ ॥ अस्त्री जाणा ते ये वृष्णी ॥ ऐसा अभीमान पाहतां पोरीं ॥ गोत्रा अण दे



खतांद्रीष्टी ॥ मारीता वैसे आध विहे ॥ ८८ ॥ समजो नियां शास्त्रार्थ ॥ मग
 कर्म करणें आनु वीत ॥ या सद्गुणां परत्रय थार्थ ॥ भोगी लनक ज्ञाने
 वृत्ते ॥ ८९ ॥ आवल सणी कुरु पी देख ॥ दर्श मिपा हे आ पुलें मुख ॥ तो व
 सी व आनी मान आधी व ॥ स्वरण वावा हातसे ॥ ९० ॥ तैसे जे जे शेष आ
 वरति ॥ आधी धर्म शास्त्र विलेखिरी ॥ परी वीट न मानी ति वींती ॥ नवल
 हंखी वाटते ॥ ९१ ॥ ऐसं बो ल तां दु वर ज्ञान ॥ रावण क्रोधा वला आहुत ॥ या
 प्राप्ती मुष्टी घात ॥ ताडि ली गंज विरव वळे ॥ ९२ ॥ पदं ताडि ला उरग ॥
 विंशुं अपी वीतां मातांग ॥ व्रीहंतं सिंधी तां सवेग ॥ या व क जैसा ख वळे पें ॥
 ९३ ॥ ऐस क्रोधं रावया ॥ सब नद न भार सिद्ध वरुन ॥ रात्री मानी जाउन कु
 वेा वी घातले ॥ ९४ ॥ संपदा आणी पुष्य क ॥ वस्तु हरी ज्या सब वी क ॥ मग

9

तो कुबेर सणां येन ॥ गेला शरणा शक्राते ॥ १५ ॥ मगतो कुबेर ते वेढा ॥ श
 क्रें के शरहिं ठे विला ॥ आसो रावणां सी पुत्र जाला ॥ मेघनाथ प्रथम वी
 १६ ॥ ये क्रल सपुत्र संतति ॥ सवाल सपौत्र प्रणति ॥ ऐंसी सहस्र युवति
 जो गीतां रावणान्धये ॥ १७ ॥ अठरा सोणी वातां श्री ॥ गर्जताति आहो रात्रि
 ॥ एष्विन्धुप माहांद्वारी ॥ क्रूर राजा उजिउ प्रसदा ॥ १८ ॥ आस्ता जातां ही
 नक्रय ॥ क्रुर्पु रदीप अठरा सदा ॥ पाप ठोने सभे सत्तोर ॥ नीज्या चरति
 एती ॥ १९ ॥ इंद्रा व्याभेणं पर्वत ॥ रावणां सेशरणा येदा ॥ शक्र आसु ये पश
 छेदीत ॥ रंशी लरीत आहं सी ॥ २० ॥ लंके शत याते आभये देत ॥ तुम्ही
 गजद्वारे आवये पर्वत ॥ समस्त आचढामान छिमात ॥ जाले उन्मत्त वा
 रण ॥ २१ ॥ रावण देवावरी बालीला ॥ मेघनादे इंद्र ते वेढा ॥ ऐरावती सगट



1

9A

पाडिल ॥ निजबळें रणांगणी ॥ २ ॥ ऐसा सहस्रवेळा सहस्रनेत्र ॥ जीति
 मंदोदरीचा पुत्र ॥ मग इंद्र जीवनामशोर ॥ ब्रीददृढ बांधीले ॥ ३ ॥ पाशाचा
 लोनिपा कशाशन ॥ इंद्र जीते प्राणीला बांधुन ॥ मग विरंची आला धांड
 न ॥ होये प्रसन्न शक्रजिता ॥ नैऋतिया आपे क्षीतवर ॥ सोडविला पुरंदर ॥
 मग रावणें देवसमग्र ॥ शेवला गीतवीले ॥ शक्रें प्राणावे नित्यहार ॥ ४ ॥
 अधरी रोहिणीवर ॥ रसाधिपति निरतर ॥ वाहे निरधांवतची ॥ घगभस्ति
 होये द्वारपाल ॥ कुबेर आणी ते आनीक ॥ चरत्राहिं सदा समाजनि स
 प्रब ॥ गृहामाजीवरावे ॥ वस्त्रे धुत वैश्वानर ॥ पुरोहित जाला विश्णुं प
 ३ ॥ पांडित्यवृगी आं गिरा कुमर ॥ नारद सुंवर गतिस्तर ॥ दाहावेळे शिवप
 जीला भावणदशावक्रें पावला ॥ वीसहस्त लाधला ॥ शीवही केला वष्य

१०

तेणे॥ क्रोन्हे ये वे स म इं रा वण ॥ पुष्प क वि मा निं वै सो न ॥ वै ला स गी री
 वट तां पु र्ण ॥ तो नं दी र क्ष ण मा हां द्वा रीं ॥ स्र णे न क्रो ज उं लं का प ति ॥
 वि व उ मां आ हे त ये क्रां ति ॥ ऐ ये ऐ क तां म य ज्या प ति ॥ पर प्र सो भा ते पा व
 ल ॥ नं दि सी स्र णे ते वे क ॥ तु ज म कं रा वे नि बो ले ॥ मी न रा हे कं रा का ठे
 ॥ जा इ न व ठे कं रा नि ॥ ऐ सं वा ल तां द श कं द र ॥ क्रो प ला ते न्हां नं द
 केश व रा ॥ शा प ना स्त्रं आ ती या र ॥ ता डे ले नं ये र व णां ॥ स्र णे उ न्त त
 तुं मु ट म ती ॥ तु ज न र वा न्न र व धि ती ॥ तु वां द श रा इ क्रे ले ति गु ती ॥ आ क
 रा वां मा रु ती प्र ग टे ला ॥ तो वा न्न र रु पे क रू न ॥ श्री ल तु सं ग र्व मो ख न ॥
 ऐ क्रो नि क्रो प ला रा व ण ॥ स्र णे आ तां उ प डि न वै ला स गी री ॥ उ व लो नि
 यां डी व प र्व त ॥ लं के सी ने इ न स्र णां त ॥ स्र णे न त की पा त ला हा स्त ॥ समु

९

109

च वल्लि चलावण ॥ १८ ॥ तं जाणोनि हीमनगा ज्यासात ॥ निजपदं राशि
 लापवत ॥ सहस्रवरुषं पर्यंत ॥ आक्रंदतरावण ॥ १९ ॥ मगकरीशिवाये
 स्तवन ॥ प्रसन्नजालात्रीनयन ॥ दशवक्रुद्विधलासोडुन ॥ आलापरतो
 नलंकेसी ॥ २० ॥ ये वरुं रेवासीरंधानस्त ॥ वैसताजालामये ज्याकांत ॥ २१ ॥
 टंडीवल्लिंगविश्रजित ॥ तं पाणो वेदतमघारे ॥ २२ ॥ सहस्राजुनेनिज
 जुनें वरुनि जाण ॥ कोडिले न वेदं जीवन ॥ ध्यानकरी तां रावण ॥ आ
 क्रंठपर्यंत बुडाला ॥ २३ ॥ परम कथा वलादशसौठी ॥ धां वोनि आलास
 याजवढि ॥ सपोलुं कोणारे यास्तुळि ॥ रेवाचळुं कोसितोसि ॥ २४ ॥ सहस्रा
 जुनें कवचालुन ॥ ग्रीवेसि धरीलादशवदन ॥ कीर्तगे टें धरीलाहीन
 ॥ जाले प्राणकासाविस ॥ २५ ॥ वेदुं कळवंदी घातला ॥ मग पौलास्तित्र ॥ वि



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com